VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

जीवनी और महिला लेखनः छूटे पन्नो की उड़ान - एक समीक्षा

डॉ. मीना एम. राठोड

एसोसीएट प्रोफेसर
अंजुमन एम.एड. कॉलेज
बालासिनोर, महीसागर
गुजरात राज्य
7383868950

प्रा. रमेशभाई बनकर

आसीस्टन्ट प्रोफेसर
बी.एड. कॉलेज
बालासिनोर, महीसागर.
गुजरात राज्य
8320506999

1. प्रस्तावना

दलित साहित्य मनुष्य को मनुष्य के रुप में देखता है। जिसे हम दलित मनोवैज्ञानिक मुक्ति का साहित्य कहते है। हशिये के बहार पडा भारतीय दलित समाज आज आत्मसम्मान तथा बहिस्कृत जिंदगी से मुक्ति पाने का संघर्ष एवं अपने आत्मसम्मान की पहचान की लडाई लड़ रहा है। शोषण के प्रति विद्रोह भाव जगाना ही साहित्य कर्मियों का कर्तव्य है। दलित साहित्य का उद्देश्य दलित समाज में जागृति पैदा करके उनमें स्वाभिमान भरना है। वे चाहते है कि संपूर्ण समाज व्यवस्था को नष्ट करके समान समाज व्यवस्था का निर्माण हो, नवीन समाज व्यवस्था निर्मित हो वहाँ हरेक व्यक्ति को समान अधिकार मिले।

दलित कहानीकारो पर डॉ. बाबासाहेब आँबेडकर के विचारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक होगा। यह प्रभाव न केवल पुरुषों पर बल्कि दलित नारी पर भी देखने को मिलेगा। दलित आत्मकथाओं के साहित्यिक मूल्य कम हो सकता है। लेकिन सामाजिक मूल्य बहुत ज्यादा है। आत्मकथाकार अपने जीवन के उतार-चढाव समाज के सामने रखता है, तब वह खुद को नंगा करता है। साथ ही साथ समाज के घिनोनै सच को लाकर समाज को भी नंगा करता है।

स्त्री आत्मकथाकारों में अनिता भारती ने छूटे पन्नो की उड़ान (आत्मकथा में) स्त्री-विमर्श की बात करने वालों का इन आत्मकथाओं को पढकर बहुत निराशा हो सकती है, क्योंकि नारी-मुक्ति के संबंध में उनके नेत्रो के समक्ष एक अलग बिम्ब रहता है। - एक पशु - जिसके गेट को खोल दिया गया है और पशु जिधर सींग समाएँ उधर भाग रहे है। नारी-मुक्ति के यह बिबं हवाई है, यथार्थ से इसका कुछ लेना देना नहीं है।

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

2. हिन्दी आत्मकथा सारांश विवेचन

आत्मकथा का अर्थ जीवन की सारी कसौटी के रुप में लेखन से है। आत्मकथा लिखने का मूल उद्देश्य यह होता है कि अपना भोगा हुआ जीवन दूसरों के समक्ष रखकर उसे प्रेरित किया जाए। आत्मकथा लिखने के लिये सत्य की विशेष आवश्यक्ता है। आत्मकथा मानव के मनरूपी जगत में स्थित यह स्थान प्राप्त होता है, जो समय आने पर अपने प्रकाश द्वारा आत्मकथा की लेखनी से निकालकर पाठक एवं समाज को आलोकित करती है। आत्मकथाकार है अपने जीवन की कहानी का स्वयं ही नायक होता है। वह स्वयं तो जीवनरूपी संसार में पुनः प्रवेश करता ही है। इस अंतरंगता में हमें भी दाखिल कर लेता है। व्यक्ति मन के अपने कच्चे रुप में जानने की बढती हुई प्रवृति के कारण आत्मकथा का कृतियां मात्र इसी अधिकार से ध्यान आकर्षित कर लेती है। साथ ही उन पन्नो में खुला जीवन, उनके भोग, अनुभव और उनकी परिकल्पनाएँ निश्चित रुप से बाँधे रखती है। बाह्य यथार्थ ओर नीजी भावनाओ के प्रति आत्मकथाओ की संवेदनशीलता में एक ऐसा सहज संप्रेषण होता है कि हम गहरी विवशता से जुड जाते है।

3, छूटे पन्नो की उडान - अनिता भारती की आत्मकथा

इसकी कहानी भी लेखिका के जीवन का किताब में आगे जुडनेवाले पन्ने से शुरू होती है। लेखिकाकी आन्तरजातिय विवाह भी उनकी जिंदगी की किताब का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पन्ना है। लेखक की अपनी उपलब्धि ही कहती है कि मुझे ऐसा जीवनसाथी मिला जो साहित्य बेशक न समझता हो, पर अपने अंदर सारी खूबियो को समेटे हुवे सही मायनो में एक सच्चा संवेदनशील दोस्त व फेमिनिस्ट पति साबति हुआ। स्त्री विरोधी विचारधारा के खिलाफ कदादेश में उनका पहला विचारात्मक लेखन का - काश! फलक विस्तृत होता। इस लेख से लिखने की शुरुआत की। प्रेमचन्द्र की प्रसिद्ध और विवादित कहानी कफन और उनकी अन्य कहानीओं को दलित स्त्रीवाद के नजरिये से देखने की शुरूआत की। सामाजिक से लेकर लेखन तक में उनके हमसफर राजीवसिंह उन्हें बहोत सहयोग देते थे। विशेषकर कवि-पत्रकार मजीद अहमद और उनके अन्य मित्र के आग्रह से लेखिका ने अपने जीवन में आये अनुभवों और संघर्ष के खट्टे-मीठे, तिकत पलो को एक पुस्तक का आकार दिया।

4. समीक्षा

ईईछूटे पन्नो की उड़ान आत्मकथा में कुल 19 प्रकरण है और हर प्रकरण को शीर्षक दिया गया है। जो लेखिका के जीवन के हर पड़ाव को पन्ने के रुप से लिखा गया है। कच्चे घडे-सा जीवन प्रकरण में अपने जीवन के लेखनकार्य का सारांश लिखा है। पहला प्रकरण-1 मेरा बचपने से अपने जीवन के पडाव से शुरूआत करते 19 वा प्रकरण वो तीन औरते जो बचपन से लेकर यदि रह गई थी ,उनको बाद में ही जान पाती है। उनको जीन्दगी में सताया गया था, उनका हल वो तीनो अपने अपने तरीके से लेती है। वही आत्मकथा खत्म व पूर्ण हो जाती है।

इस आत्मकथा में लेखिका स्वयं विषय है। जरूरी है कि वह एक साथ स्वयं को विस्तृत भी करे और याद भी करे लेखिका अनिता भारती बचपन में अन्ना नाम से माता के द्वारा पुकारी जाती थी । लेखिका बचपन में शर्मीली, डरपोक और संकोची थी। सबसे छोटी होने के कारण माँ की दुलारी थी। जो उनके जीवन का अमूल्य अमानत है। आदर्श माता-पिता का जीवन उसे हंमेशा उर्जा देता है। पिता श्रेष्ट पेटर्न मास्टरजी थे। माँ की

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

बीमारी के करण भाभी (माँ) को पागलखाने में भरती करना पडा जो उनके लिये बहुत दुखदायक था। बड़ा भाई मनोहर, बडी, बहन तिलक, उनसे बडी बहन पुष्पा और भाई अशोक सहपरिवार को खूब संघर्ष से जीना पड़ा था।

लेखिको अनिताजी ने अपने बाल्यावस्था से लेकर विवाहित जीवन के उन्नीस सालो तक की जीवन की सफर को अपने अनुभव के पथ से गुजरे हुए पन्नों को सजोडे के रखा है जीवन का खट्टा-मीठी झांकी को पुरे निखालसता से लिखा है छूटे पन्नो की उड़ान -96 पन्नो अनिताजी जीवन के पन्नो में अनिताजी नें जीवन के पन्नो को हुबहु पेश किया है अपनी आत्मकथा के अपने हमसफर राजीव को अर्पण किया है । मैं तो लिखूगी ही से अपनी जीवन बीती की शुरुआत करके लेखिका बाताती है कि पठने लिखने का शौक कालेज तक आते आते लत मे बदल गई । प्रेमविवाह के फल स्वरुप सही मायने मे एक सच्चा सवेदनशील दोस्त व फेमनिस्ट पति से उपलब्ध बच्चो को संभालने के साथ अन्याय के विरोध का विचार अपने मे बोया । कथादेश मे अपना पहला विचारात्मक लेख काश फलक विस्तृत होता से लेखन की शुरुआत की कफन और दलित स्त्री पर विमर्श परक लेख लिखके अलोचना लिखने की शुरुवात की सरकारी नौकरी करते हुए बच्चो का पालन करते हुए लेखन कार्य किया । जिसमे उनके हमसफर राजीवसिंह का बहुत सहयोग मिला । आत्मकथा के कुछ अंश अपेक्षा सवेद स्त्रीकाल मंतव्य और दुसरी परम्परा मे छपे अपने कच्चे घडे से जीवन को अनुभवो से पीट-पीट कर आकार गढ करने के लिए अपने शिक्षको का आभार प्रगट करती है । बचपन मे डरपोक संकोची और शर्मिली थी, मा प्यार से मेरी अन्ना अनिता बहुत सीधी है कहती थी । बडा भाई मनोहर और बहनो मे सबसे छोटी होने के कारण मा का प्यार मिला, जो उनके जीवन की अमूल्य अमानत है। दिल्ली के सीलमपुर क्षेत्रे मे जन्म जात दुलारे लाल नाना रेल के ड्राईवर थे, पिता भाईजी बेहत मेहनत ईमानदार और लगनशील थे । पारिवारिक समस्याओ के चलते उनकी माता सावित्रीदेवी भाभी बीमारी के कारण मरणांतिक मानसिक रुप से बीमार रही । बचपन मे दीवान अंकल से जो अत्याचार का अनुभव मिला उसको निष्ठा से लिखा। अपनी मां के प्रति सन्मान छलकाते हुए लिखती है ,सच मे मां मां ही होती है। मा के जैसी संवेदनशीलता का धरातल अन्यत्र नही होता ,रघुवर पुरा के स्कूल मै बडी

बहन पुष्पा के साथ क्लास टीचर गाँधी मैडम का बहुत सनकी क्रूर और जातिवादी रवैया से जो मर्मिक उत्पीडन का अनुभव किया, उसके बारे मे और जातिवादी युनिफोर्म मे कमीज के अंदर शमीज के बजाय पिता की बनियान पहननी पडती थी ये गरीब बच्चो का मुसीबत और मुश्किल का वर्णन मार्मीक है । कुत्ता शेर का जिक्र उनके प्राणी प्रेम को प्रादर्शित करता है ।

लेखिका को सांस्कृतिक कार्यक्रमो और वाद विवाद तथा नाटको मे खूब बढ-चढकर भाग लेना, खो-खो, कब्बडी, क्रिकेट, ऊच-नीच क पापडा, छुपम-छुपाई का शोख था । निम्न मध्यम वर्ग के परिवार से होने के कारण जूडो-कराटे से दूर होना पडा । उसका रेज व्यक्त करती है, पारिवारिक समस्या के कारण सबसे बडा भाई मनोहर को पढाई छोड के पिताजी का मदद के लिए कटर मास्टर बनना पडा, उसका बडा दुख होता है। दलित छात्र के साथ जातिगत भेदभाव का विरोध, शिक्षणसमस्या के लिए राजनैतिक संगठन से जुडना, दलित अधिकारो के सक्रिय कार्यकर का काम करती है । राजपुत परीवार के राजीवसिंह से मित्रता के बाद मे उनसे आंतरजातीय प्रेमविवाह कोई क्रन्ति से कम नही था । उनके पति के परिवार के साथ हजार ताने, अपमान और जीवनसाथी के असीम प्रेम से बसाती है । समाज मे जाति के कोठ-कंलक को समाप्त करने का एक मात्र हथियार साहित्य ही हो सकता है । ये ज्ञात होता है कि उन्होने शुध्ध बुध्धिष्ट रीती से शादी करके समाज मे एक नया उदाहरण पेश किया है ।

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

उपसंहार

अगर आप इस तरह का सामाजिक जीवन जीना चाहते है और समाज के लिए काम करना चाहते हो तो, आप के द्वारा मजबूती से लिए गये निर्णय, आपके जीवन और विचारधारा को यह साहित्य मजबूती प्रदान करने का कार्य करेगे । यह अनिता भारती अपने व्यक्तिगत अनुभाव से कहती है । अनीता भारती जीवनी एक सच्चाई प्रकट करती है । अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए उनका संघर्ष औरो के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनता है ।

संदर्भ साहित्य

(1) छूटे पन्नो की उड़ान __ अनीता भारती
स्वराज प्रकाशन , नई दिल्ली -110002,
प्रथम संस्करण 2018

(2) दलित अल्पसंख्यक __ संपादक संतोष भारती
सशक्तिकरण राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली - 110002
पहला संस्करण 2008

(3) हिन्दी आत्मकथा __ डॉ. सविता सिंह
स्वरूप विवेचन और विकासक्रम __ शैलजा प्रकाशन,कानपुरी-208011
संशोधित संस्करण 2015

(4) हिन्दी कथा साहित्य में __ डॉ. पंडीत बन्ने
दलित विमर्श शक्ति प्रकाशन,अहमदाबाद - 380013
संस्करण 2012

(5) हिन्दी लिखिकाओ की __ डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र
आत्मकथाए अमन प्रकाशन,कानपुरी - 205012
द्वितीय संस्करण 2015

http://vidyajournal.org